International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Volume 01, No. 04, October - December, 2019, pp.47-50

महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. अमिता जैन*

सार

पठन–पाठन के अनुभवों में एक नया मोड़ आया है। मीडिया के पढ़ाई के साधन विविध रूपों में उपलब्ध कराता है जिसे विद्यार्थी ग्रहण करते हैं। विद्वान लोग अपने ज्ञान, अनुभवों को और सर्वोत्तम पद्धतियों को यू–ट्यूब, स्लाइड शेयर और ट्विटर पर साझा करते हैं। हर सिक्के के दो पहलू होते हैं सकारात्मक और नकारात्मक। अगर विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव पडता है तो नकारात्मक भी पडता है। क्योंकि सोशल मीडिया पर विद्यार्थी अधिक से अधिक समय व्यतीत कर रहे हैं। वे अध्ययन कम करते हैं तथा चैटिंग करना, मित्र बनाना आदि कार्य अधिक करते हैं। वे अपने ज्ञान में तो वृद्धि कर रहे हैं परंतु साइबर अपराधों में लिप्त होते जा रहे हैं। अतः विद्यार्थियों पर प्रभाव व दुष्प्रभाव दोनों हो रहे हैं।

'kCnkoyh% *सोशल मीडिया, कम्प्यूटर, इटंरनेट, नवाचार।*

परिचय

आज का युग 'सोशल मीडिया' का युग है। रामायण की पौराणिक कथा के अनुसार रामभक्त हनुमान रावण की लंका में दूत बनकर गए थे। मेघदूत की रचना करने वाले कालीदास ने अपने संदेश को प्रेषित करने के लिए मेघ को माध्यम बनाया। अतः इन माध्यमों से अपने विचारों, भावनाओं और संदेशों को एक–दूसरे तक संप्रेषित किया करते थे। सवांद के माध्यम तकनीक के साथ बदलते चले गए। मुद्रित माध्यम भी हमें खूब भाया। कहा जाता है मनुष्य सभी जीवों में सर्वश्रेष्ठ जीव है। आदिमानव के काल से वह 21 वीं शताब्दी में कहाँ से कहाँ पहुँच गया है। ऐसे ही 21 वीं शताब्दी इंटरनेट और वेब मीडिया (सोशल मीडिया) के युग की शताब्दी मानी जा रही है। मानो तो इंटरनेट ने मनुष्य के जीवन को एकदम सरल और सुगम बना दिया है। अब हमें सक्रिय इंटरनेट कनेक्शन वाला फोन, लेपटॉप या कम्प्यूटर लेने की आवश्यकता होती है। आज का दौर सोशल मीडिया का है। हर आयु वर्ग के लोगों में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का क्रेज दिनोंदिन बढता जा रहा है। जिसमें विद्यार्थी वर्ग मुख्य रूप से शामिल है। पहली बार सोशल मीडिया की चर्चा तब हुई जब 1994 में सबसे पहला सोशल मीडिया 'जीओसाइट' के रूप में सामने आया। परन्तु आज फेसबुक, ट्विटर, गूगल प्लस, यू–ट्यूब, व्हाटस्एप्प, टेलीग्राम जैसी तमाम सोशल मीडिया साइट्स दुनिया को एकसूत्र में बांध रही। सूचना के आदान–प्रदान, जनमत तैयार करने, विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के लोगों को आपस में जोड़ने, भागीदार बनाने और महत्त्वपूर्ण यह है कि नए ढंग से सम्पर्क करने में सोशल मीडिया एक सशक्त और बेजोड़ उपकरण के रूप में तेजी से उभर रहा है। वर्तमान समय में आईसीटी (सूचना संचार प्रोद्यौगिकी) आधारित सोशल मीडिया के आविर्भाव ने अध्ययन और शिक्षा में नवाचार की गति को उल्लेखनीय तेजी प्रदान की है।

leL;k dk vkfpR;

किसी भी शोध कार्य के लिए समस्या का चयन महत्वपर्ण स्थान रखता है। किसी भी कार्य को करने के पीछे कोई न कोई कारण होता है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया सबसे अधिक प्रचलित व सशक्त माध्यम है।

---

* सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाड़नूँ, नागौर, राजस्थान।

सोशल मीडिया का विद्यार्थियों पर बहुत अधिक प्रभाव दिखाई देता है। सोशल मीडिया के विकास के साथ–साथ समाज में परिवर्तन हो रहा है विशेषकर विद्यार्थी वर्ग पर इसका अमिट प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार से दृष्टव्य हुआ है। वर्तमान में सोशल मीडिया के साधन प्रत्येक घर में उपलब्ध है। जिससे इन साधनों का प्रभाव जीवन के हर पक्ष (यथा सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक इत्यादि) पर दिखाई देता है। इसके माध्यम से जहाँ हमें नवीन जानकारियों का पता लगता है, वहीं दूसरी तरफ नयी परम्पराएँ (सांस्कृतिक तथा सामाजिक) तथा अनेकानेक नवीन समस्याओं का भी प्रादुर्भाव हुआ है। साथ ही हमारे मूल्यों (सामाजिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक) का भी ह्रास दिखाई देता है। सोशल मीडिया के माध्यम से विद्यार्थी अपने ज्ञान में तो वृद्धि कर रहे हैं परंतु कुछ अनेक अपराधिक कार्यों में लिप्त होते जा रहे हैं। अतः विद्यार्थियों पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव पड़ रहे हैं। इसलिए इस तथ्य को ध्यान में रखकर इस समस्या पर ध्यान केन्द्रित किया।

leL;k dFku

''महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन।''

“kks/k d mís’;

- महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
- महाविद्यालय स्तर के कला वर्ग के छात्र व कला वर्ग की छात्राओं में सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
- महाविद्यालय स्तर के वाणिज्य वर्ग के छात्र व वाणिज्य वर्ग की छात्राओं में सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

tul[;k ,oa U;kn’k

न्यादर्श सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। समष्टि की सभी विशेषताएँ उसमें होती है। पी.वी. यंग के अनुसार –''यह सम्पूर्ण समूह का भाग है जिसे समग्र या पूर्ति के नाम से जाना जाता हैं। जनसंख्या के रूप में नागौर जिले के लाडनूँ तहसील को लिया गया है।

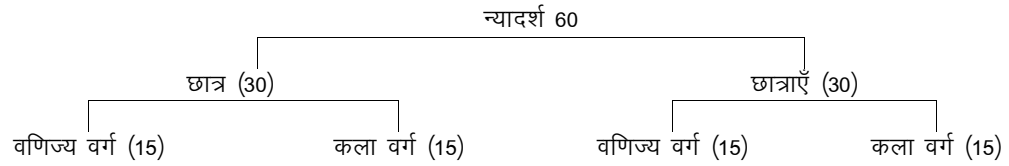

ifjdYiuk

- महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- महाविद्यालय स्तर के कला वर्ग के छात्र व कला वर्ग की छात्राओं में सोशल मीडिया के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- महाविद्यालय स्तर के वाणिज्य वर्ग के छात्र व वाणिज्य वर्ग की छात्राओं में सोशल मीडिया के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

'kks/k fof/k

शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। 'सर्वेक्षण' का शाब्दिक अर्थ है–'अवलोकन करना' अथवा 'अन्वेषण करना'। सर्वेक्षण विधि में किसी घटना का अवलोकन कर ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

'kks/k d pj

- स्वतंत्र चर :–सोशल मीडिया
- आश्रित चर :–विद्यार्थी

'kks/k d: midj.k

शोध कार्य में तथ्य संकलन के लिए अप्रमापीकृत उपकरणों के अंतर्गत 'स्वनिर्मित प्रश्नावली' का प्रयोग किया गया है। ।

lkf[;dh

प्रस्तुत शोध में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

'kks/k d: fu"d"k

- महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

fu"d"k

महाविद्यालय स्तर के 30 छात्रों का मध्यमान 38.13 तथा प्रमाप विचलन 6.45 और महाविद्यालय स्तर की 30 छात्राओं का मध्यमान 33.63 तथा प्रमाप विचलन 7.65 प्राप्त हुआ है। इनका टी का मान 2.47 है जो कि स्वतंत्रता अंश 58 पर त्रुटि के 0.01 स्तर पर इसके अपेक्षित मान 2.59 से कम तथा त्रुटि के 0.05 स्तर पर इसके अपेक्षित मान 1.97 से ज्यादा है। इससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि कथन संख्या 1 के क्रम में प्राप्ताकों के मध्य अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

- महाविद्यालय स्तर के कला वर्ग के छात्र व कला वर्ग की छात्राओं में सोशल मीडिया के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

fu"d"k

कला वर्ग के 15 छात्रों का मध्यमान 35.66 तथा प्रमाप विचलन 5.01 और कला वर्ग की 15 छात्रों का मध्यमान 37.53 व प्रमाप विचलन 4.46 प्राप्त हुआ है। इनका टी का मान 1.19 है जो कि स्वतंत्रता अंश 28 पर त्रुटि के 0.01 स्तर पर इसके अपेक्षित मान 2.76 से कम है तथा त्रुटि के 0.05 स्तर पर इसके अपेक्षित मान 2.05 से कम है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कथन संख्या 2 के क्रम में प्राप्तांकों के मध्य कोई अन्तर नहीं है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

egkfo|ky; Lrj d: okf.kT; ox: d: Nk= o okf.kT; ox: dh Nk=kvk: e: lk'ky ehfM;k d: i:fr dkb: lkFk:d v:rj ugh: ik;k tkrk g: A

fu"d"k% महाविद्यालय स्तर के वाणिज्य वर्ग के 15 छात्रों का मध्यमान 31.6 व प्रमाप विचलन 8.85 और वाणिज्य वर्ग की 15 छात्राओं का मध्यमान 38.73 तथा प्रमाप विचलन 4.58 प्राप्त हुआ है। इनका टी का मान 2. 77 है जो कि स्वतंत्रता अंश 28 पर त्रुटि के 0.01 स्तर पर इसके अपेक्षित मान 2.76 तथा त्रुटि के 0.05 स्तर पर इसके अपेक्षित मान 2.05 से ज्यादा है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कथन संख्या 3 के क्रम में प्राप्तांकों के मध्य अन्तर संयोगवश है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

'kks/k d: 'kSf{kd fufgrkFk

किसी भी शैक्षिक अनुसंधान की सार्थकता इस बात में निहित होती है कि उस शोध से प्राप्त हुए निष्कर्ष शिक्षा के साथ साथ समाज उपयोगी भी हो सकें। इसमें विद्यार्थियों के शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक स्तरों पर सोशल मीडिया से पड़ने वाले प्रभावों को सम्मिलित किया गया है। शोध की उपयोगिता शैक्षिक क्षेत्र में निम्नानुसार है–

- lekt d: fy, :– सोशल मीडिया विद्यार्थियों के सभी पक्षों को प्रभावित करता है। सोशल मीडिया के अन्तर्गत श्रव्य–दृश्य सामग्री आती है। शिक्षा तकनीकी ने मानव के अधिगम व सीखने के स्तर को विकसित किया है। सोशल मीडिया के द्वारा सामाजिक सम्बन्ध मजबूत होते हैं। अतः यह शोध समाज के लिए उपयोगी व आने वाली पीढ़ी के लिए सहायक होगा।

- v/;kidk d fy, :– 1. अध्यापक विद्यार्थियों को सोशल मीडिया द्वारा उन कार्यक्रमों के बारे में अवगत करायें जो छात्रों के लिए शैक्षिक दृष्टि से उपयोगी हों।

v/;kid le; lkj viuk dk;l djus d fy, fo|kfFk;k dk ifjr dj rFkk le; foHkkx pØ cukdj i<kbZ o lk'ky ehfM;k dk i;kx djus dk le; fu/kkfjr djus d fy, dgA

- fo|kfFk;k d fy, :– प्रस्तुत शोध के प्रभावों से ज्ञात हुआ है कि विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष मनोरंजन के साथ अप्रत्यक्ष ज्ञान से लाभ प्राप्त हुए हैं। इससे विद्यार्थियों के ज्ञान कोष में वृद्धि होती है।
- ekrk&firk d fy, :– माता–पिता को यह ध्यान रखना चाहिए कि बालक क्या देख रहा है ? उसे क्या देखना चाहिए ? माता–पिता को बालकों को देर रात तक सोशल मीडिया का प्रयोग नहीं करने देना चाहिए।

mi lagkj

अतः सोशल मीडिया को परस्पर संवाद का वेब आधारित एक ऐसा अत्यधिक गतिशील मंच कहा जा सकता है, जिसके माध्यम से लोग संवाद करते हैं, अपनी जानकारियों का आदान प्रदान करते हैं और उपयोगकर्त्ता जनित सामग्री को सृजन की सहयोगात्मक प्रक्रिया के एक अंश के रूप में संशोधित करते हैं। सोशल मीडिया के प्रभाव को देखते हुए ही प्रत्येक क्षेत्र से जुड़े लोगों ने अपनी अपनी जरूरतों के मुताबिक समय–समय पर जन समूह को एकत्रित करने के लिए इन माध्यमों का बखूबी प्रयोग किया। खास बात यह है कि समाचार पत्रों में, व्यापार तलाशने के लिए, बाजार से विज्ञापन प्राप्त करने हेतु, फिल्म के प्रोमो से लेकर पैसे बटोरने तक शामिल है। शिक्षक–विद्यार्थी से लेकर साहित्यकार, पत्रकार, चित्रकार, राजनीतिज्ञ, फिल्मी सितारे या कोई आम आदमी क्यों न हो सभी ने अपने होने के नाम को यहाँ दर्ज कराया है। ज्ञान की प्राप्ति और किसी विषय में गहराई से अध्ययन के लिए अब यह आवश्यक नहीं है कि शिक्षा के पारम्परिक और औपचारिक संस्थानों का ही शरण लिया जाए। आज ऑनलाइन कम्युनिटीज पर यदि लगन से प्रयास किया जाए तो कोई भी विद्यार्थी किसी भी विषय में महारथ हासिल कर सकता है। आईसीटी (सूचना संचार प्रौद्योगिकी) आधारित सोशल मीडिया के आविर्भाव ने अध्ययन और शिक्षा में नवाचार की गति को उल्लेखनीय तेजी प्रदान की है। 20 वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में जब से इंटरनेट सर्वत्र सुलभ हुआ है पठन–पाठन के अनुभवों में एक नया मोड़ आया है।

lanHk xzUFk lwph

- त्रिवेदी, आर.एन.,शुक्ला, डी. पी. (2004) रिसर्च मैथ्डोलॉजी, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर।
- श्रीवास्तव, डी. एन. (2006) अनुसंधान विधियाँ, साहित्य, प्रकाशन, आगरा।
- शर्मा, आर. ए. (2006) शिक्षा अनुसंधान, आर. लाल बुक डिपो मेरठ।
- राय, पारसनाथ (2007) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा।
- सरीन शशिकला, सरीन, अंजनी (2007) शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
- रायजादा, बी. एस. व वर्मा वन्दना (2008) शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
- सिंह, अरूण कुमार (2010) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली।
- जौहरी, शशांक, सुरंजना, जे. (2010)कम्प्यूटर कोर्स, मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली।
- भार्गव, नीरज 2012, सूचना प्रौद्योगिकी का आधार–II ,माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर।
- शर्मा, रविन्द्र (2013) इंटरनेट टैक्नोलॉजी और वेब डिजाइन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- गोयल, विष्णु 2017, सूचना प्रौद्योगिकी की अवधारणा'–II ,माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर।

❖◆❖